

#### **Song Book- Class IV**

## 1. Alankar: Different patterns of Swar

साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां सांध, निप, धम, पग, मरे, गसा

#### 2. Tal:- Tal measures music

#### तालझपताल

मात्रा — 10; विभाग—4; ताली—3 (प्रथम, तीसरी और आठवीं मात्रा पर); खाली — 1(छठी मात्रा पर) ठेका —धी ना । धी धी ना । ति ना । धी धी ना

0

#### राग-भूप

ठाठ- कल्याण, जाति- औडव- औडव, स्वर- मध्यम और निषाद दोनों स्वर वर्जित
वादी स्वर- गांधार, संवादी स्वर-धैवत
गायन समय-रात्रि का प्रथम प्रहर
आरोह- सा रे ग प, ध, सां
अवरोह-सां, ध प, ग, रे, सा

## श्लोक

ऊँ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम् न्यायेन मार्गेण महीं महीशः। गो ब्राह्मणेभ्यश्शुभमस्तुनित्यम् लोकास्समस्तास्सुखिनो भवन्तु।।

PAGE NO. 2 CLASS-IV SONG BOOK

Meaning:-May there be happiness for all people. May the rulers righteously rule the earth. May there be welfare for cows and men of wisdom at all times. May all beings be happy.

#### **Prayer Song**

1 निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे—4
श्वासों की स्वर झंकार रहे, जगदीश हरे—4
आकाश हिमालय सागर में, पृथ्वी पटल चराचर में—2
ये मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे—4 निर्बल के प्राण......
जब दया दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती हरियाती है—2
इस आस पे जन उच्चार रहे, जगदीश हरे—4

निर्बल के प्राण.....

सुख दुख की चिन्ता हैं ही नहीं, भय है विश्वास ना जाय कहीं निर्बल के प्राण

तुम हो करूणा के धाम सदा, करते हो सबके काम सदा बस इतना सदा विचार रहे, जगदीश हरे

2 God make my life a little light
Within the world to glow,
A little flame that burneth bright
Wherever I may go
God make my life a little flower
That giveth joy to all

PAGE NO. 3 CLASS-IV SONG BOOK

ոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոոո Content to bloom in native bower, Although the place be small. God make my life a little song That comforteth the sad, That helpeth others to be strong makes the singers glad. 3 तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ। तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ। तू ही वाहेग्रु तू यीश्रमसीह, हर नाम में तू समा रहा। तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ। तू ही वाहेगुरु तू यीशूमसीह, हर नाम में तू समा रहा। तू ही राम है..... तेरी जात-पात कुरान में, तेरा दरस वेद पुराण तेरी जात पात कूरान में,तेरा दरस वेद पूराण ग्रुग्रंथ जी के बखान में, ग्रुग्रंथ जी के बखान में तू प्रकाश अपना दिखा रहा। त् ही राम है त् ही रहीम है, त् करीम कृष्ण खुदा हुआ। तू ही राम है..... अरदास है कहीं कीर्तन, कहीं रामधून कहीं आवहन। अरदास है कहीं कीर्तन, कहीं रामधून कहीं आवहन। विधिवेद का है यह सब चरन,विधिवेद का है यह सब चरन तेरा भक्त तुझ को बूला रहा।

तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।

PAGE NO. 4 CLASS-IV SONG BOOK

ַהתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתתת

तू ही राम है तू ही रहीम है, तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।

4. जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को मिल जाए तरुवर की छाया, ऐसा ही सुख मेरे मन को मिलाहै ,मैं जब से शरण तेरी आया, मेरे राम।

भटका हुआ मेरा मन था, कोई मिल न रहा था सहारा।

लहरों से लड़ती हुई नाव को जैसे मिल ना रहा हो किनारा।

इस लड़खड़ाती हुई नाव को जो किसी ने किनारा दिखाया,

ऐसा ही सुख मेरे मन को मिलाहै ,मैं जब से शरण तेरी आया, मेरे राम।।

शीतल बनें आग चंदन के जैसी राघव कृपा हो जो तेरी।

उजयाली पूनम की हो जाये राते जो थी अमावस अँधरी।

युग—युग से प्यासी मुरु—भूमि ने जैसे सावन का संदेश पाया।

ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है ,मैं जब से शरण तेरी आया, मेरे राम।

# 5. देश भिक्त गीत : खुद जियो

खुद जियो, औरों को भी जीने दो, यहीं तो है जिंदगी का रास्ता, तुम्हें वतन का, शांति का वास्ता चमन में फूल खिलते भांति—भांति के, मगर सभी का होता एक ही चमन, हो रहने वाले हम किसी भी प्रांत के, है एक अपनी धरती, एक ही गगन, खिंचे—खिंचे से दिल हैं फिर किसलिए, चलो दिलों में लेके एक ही लगन, खुद जियो, औरों को भी जीने दो, यहीं तो है जिंदगी का रास्ता, तुम्हें वतन का, शांति का वास्ता है लड़ना ही तो मिलके लड़ो भूख से, जो भूख सारे देश को खा रही, मिटाओ जाति—पाति, लड़ो फूट से, वो फूट जो हमारे घरों को जला रहीं हैं खेलना ही खून से तो आओ फिर, कि सीमा देश की तुम्हें बुला रहीं खुद जियो, औरों को भी जीने दो, यहीं तो है जिंदगी का रास्ता, तुम्हें वतन का, शांति का वास्ता यहीं है लिखा गीता और कुरान में, यहीं हैं वाणी नानक और कबीर की, इसीलिए तो गाँधी जी ने जान दी, कि समझे दुनिया बात उस फ़कीर की, उन्हीं की ज़िन्दगी है किसी काम की, समझते हैं जो दूसरों की पीड़ भी, खुद जियो, औरों को भी जीने दो, यहीं तो है जिंदगी का रास्ता, तुम्हें वतन का, शांति का वास्ता

PAGE NO. 5 CLASS-IV SONG BOOK

उतरे जन—मन के आँगन में ज्ञान किरण उतरे ज्योति कलश सूरज सा छलके प्रभा—पुंज बिखरे सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा

रस रोशनी विनिर्मित संस्कृति भारत की अपनी बन कर यह आलोक पर्व—सा अग—जग में फैले संगच्छध्वं संवदध्वं संवोमनासि जानताम् वसुधैव कुटुम्बकम्। वसुधा ही कुटुम्ब है अपना ऐसा भाव बने जन—मन—के सब भेद मिटे और समता प्रेम बढ़े नव मानव के सृजन यज्ञ के हम ऋत्विज सारे संस्कृति शिल्पी चित्त गढ़ेंगे हम न्यारे—न्यारे तक्षशिला और नालंदा के वारिस हैं हम आत्मदीप बनने की प्रेरणा जन—मन में भर दें ज्ञान दीप्त हो चित्त, हृदय में श्रद्धा सजल भरें। विज्ञानि मस्तिष्क माँगलिक प्रज्ञा वरण करें।

सा विधा या विमुक्तये

मुक्त चित्त की प्रेरक विद्या जग को दान करें सब संस्कृति मानव की संस्कृति ऐसा भाव भरें आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

श्रद्धा पूरित चित के सारे बंद कपाट खुलें

PAGE NO. 6 CLASS-IV SONG BOOK

गुरारारारारारारा संस्था स्थान स्थान

शुद्ध हम चिदानंदमय आत्मरूप हम नित्य विमल शील चारित्र्य धनी हम यह संकल्प करें। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योंमाऽमृतंगमय। हम तम पर आलोक विजय का उत्सव मधुर रचें राष्ट्र प्रेम और विश्व शांति की पावन ऋचा रचें विद्या भूषित जीवन सबका बने लिलत संगीत सविता तेज सुप्रेरित दर्शन चिंतन दृष्टि रचें हम भारत के गौरव सारी वसुधा की आशा विश्व ग्राम के हम अधिवासी हम सबके सब अपने।

# 7 प्रकृति गीत

हरी— हरी वसुंधरा पे नीला—नीला ये गगन के जिस पे बादलों की पालकी उड़ा रहा पवन दिशाएं देखों रंग—भरी, चमक रही उमंग भरी, ये किसने फूल—फूल पे किया सिंगार है, ये कौन चित्रकार है,ये कौन चित्रकार। तपस्वियों—सी हैं अटल ये पर्वत की चोटियाँ ये सर्प—सी घुमावदार घाटियां ध्वजा से ये खड़े हुए है वृक्ष देवदार के, गलीचे ये गुलाब के, बगीचे ये बहार के, ये किस किव की कल्पना का चमत्कार है,

PAGE NO. 7 CLASS-IV SONG BOOK

innununung magamannununung

कुदरत की इस पवित्रता को तुम निहार लो, इसके गुणों को अपने मन में तुम उतार लो, चमकाओ आज लालिमा अपने ललाट की, कण—कण से झांकती तुम्हें छवि विराट की, अपनी तो आँख एक है उसकी हजार है, ये कौन चित्रकार है,ये कौन चित्रकार।

# 8 गाँधी गीत

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे। परदु:खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।। ।।वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे।। सकल लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे के नीरे। वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी ते नीरे। ।। वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे।। समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे। जिह्नवा थकी असत्य न बोले परधन नव झाले हाथ रे।। ।। वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे।। मोह माया व्यापे नहि जेणे, दृढ़वैराग्य जेना मनमा रे। रामनामशूँ तालीलागी, सकल तीरथतेना तनमा रे। । विष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड परायी जाणे रे।। वणलोभी ने कपटरहित छे.काम क्रोधनिवार्या रे। भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करतां, कुल एकोतेरताया रे।। ।। वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड पराई जाणे रे।।

PAGE NO. 8 CLASS-IV SONG BOOK

# a**Festival Song** Mary's boy child Jesus Christ, was born on Christmas Day And man will live for evermore, because of Christmas Day Long time ago in Bethlehem, so the Holy Bible said Mary's boy child Jesus Christ, was born on Christmas Day Hark, now hear the angels sing, a king was born today And man will live for evermore, because of Christmas Day Mary's boy child Jesus Christ, was born on Christmas Day While shepherds watch their flocks by night They see a bright new shining star They hear a choir sing a song, the music seemed to come from afar Hark, now hear the angels sing, a king was born today And man will live for evermore, because of Christmas Day For a moment the world was aglow, all the bells rang out There were tears of joy and laughter, people shouted "Let everyone know, there is hope for all to find peace" PAGE NO. 9 CLASS-IV SONG BOOK